

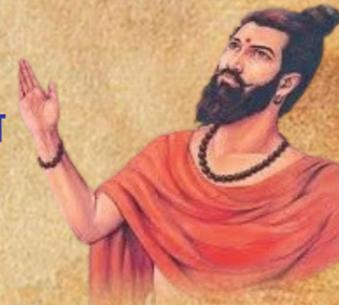


## मास का सूत्र

“सभी वस्तुएँ (सत्त्व) किसी उद्देश्य (परार्थ) के लिए ही विद्यमान होती हैं।”

— महर्षि कणाद, वैशेषिक सूत्र

यह सूत्र बताता है कि विज्ञान, ज्ञान या किसी भी तत्व का उपयोग मानव कल्याण हेतु होना चाहिए — यह स्वयं में नहीं, उपयोगिता और उद्देश्य में अर्थपूर्ण है।



## सम्पादकीय

“विज्ञान: जीवन को सरल, सुरक्षित और समृद्ध बनाने की कला”

विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं या वैज्ञानिक शोध पत्रों तक सीमित नहीं है। यह हमारे चारों ओर है — हमारी सांसों में, रसोई की भाप में, मोबाइल की घंटी में, इंटरनेट की तेज़ रफ्तार में, बिजली की रोशनी में और अस्पताल की चिकित्सा पद्धतियों में। वास्तव में, विज्ञान आज के युग का सबसे विश्वसनीय सहयात्री बन चुका है, जो हमारे हर कदम पर मौजूद है और हमारे जीवन को बेहतर, आसान और सुरक्षित बनाता है।

प्रातःकाल की नींद खुलने से लेकर रात्रि में सोने तक, विज्ञान हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। अलार्म घड़ी से जागना, ब्रश करना, नहाना, नाश्ता पकाना — हर प्रक्रिया में वैज्ञानिक तकनीक और आविष्कार छिपे हुए

हैं। शिक्षा क्षेत्र में स्मार्ट क्लास और डिजिटल सामग्री ने ज्ञानार्जन को और अधिक प्रभावी बनाया है। मोबाइल फोन, लैपटॉप, वाई-फाई और सोशल मीडिया के माध्यम से संवाद के नए द्वार खुले हैं।

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में विज्ञान ने क्रांति ला दी है। अब गंभीर बीमारियों का निदान मशीनों द्वारा सटीक रूप से संभव है और जीवन रक्षक दवाओं की खोज ने लाखों जीवन बचाए हैं। कृषि, उद्योग, यातायात, संचार, अंतरिक्ष अनुसंधान — हर क्षेत्र में विज्ञान ने मानव जाति को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है।

किन्तु, विज्ञान का यह वरदान तभी उपयोगी है जब हम इसे विवेक के साथ प्रयोग करें।

अंधाधुंध तकनीकी उपभोग ने पर्यावरणीय असंतुलन, प्रदूषण और सामाजिक अलगाव जैसे संकट भी खड़े किए हैं। अतः यह आवश्यक है कि विज्ञान का उपयोग मानवता की सेवा में, प्रकृति के संतुलन के साथ और नैतिक मूल्यों के अनुरूप किया जाए।

आज आवश्यकता है विज्ञान के प्रति एक जागरूक, समझदार और जिम्मेदार दृष्टिकोण की — ताकि विज्ञान न केवल हमारी ज़रूरतों को पूरा करे, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित, समृद्ध और स्थायी भविष्य का मार्ग भी प्रशस्त करे।

— सम्पादक

“विश्वत” – विश्वविद्यालय डिजिटल न्यूज़लेटर

## सार समाचार

डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय खंडवा में विविध आयोजन

- भोपाल में आयोजित शोध-शिखर 2025 में डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, खंडवा ने रिसर्च व नवाचार में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 6 अवॉर्ड प्राप्त किए। 18 छात्रों व 7 प्राध्यापकों ने संदेश दफ्तरी के नेतृत्व में भाग लिया। कुलपति डॉ. अरुण जोशी व कुलसचिव श्री रवि चतुर्वेदी ने बधाई दी।
- गर्मी में पक्षियों के लिए सीवीआरयू ने परिसर में सकोरे लगाए। सभी शिक्षक, कर्मचारी व छात्र इस पर्यावरणीय पहल में शामिल हुए। कुलसचिव श्री चतुर्वेदी ने इसे प्रेरणास्पद बताया।
- कॉमर्स स्कूल द्वारा “स्टार्टअप्स के लिए पूंजी व वित्तीय प्रबंधन” पर कार्यशाला आयोजित की गई। डेयरी सेक्टर को ध्यान में रखते हुए फंडिंग, पिच डेक व निवेश से जुड़े विषयों पर मार्गदर्शन मिला।
- मैनेजमेंट की छात्रा साक्षी बरोले ने कालालपुर में आयोजित ग्लोबल इंटरशिप प्रोग्राम में भाग लेकर विश्वविद्यालय व जिले का नाम रोशन किया।
- एस.के. फाइनैस द्वारा विश्वविद्यालय में आयोजित चयन ड्राइव में बीए, बीकॉम व बीबीए अंतिम वर्ष के छात्रों ने भाग लिया, तीन छात्र शॉर्टलिस्ट हुए।
- अवर पावर, अवर प्लैनेट” कार्यशाला में फार्मा छात्रों ने पर्यावरण संरक्षण पर मॉडल प्रस्तुत किए। कुलपति व रजिस्ट्रार ने नवाचार की सराहना की।



## देशज तकनीक ज्ञान – परंपरा और प्रगति का सेतु

भारत जैसे विविधताओं से भरपूर देश में सदियों से चली आ रही देशज तकनीकें (Indigenous Technologies) हमारे पूर्वजों की ज्ञान-परंपरा, अनुभव, और प्रकृति के साथ सामंजस्य का प्रतीक हैं। ये तकनीकें न केवल स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित की गई हैं, बल्कि इनका आधार प्रकृति-सम्मत, सतत और सरल वैज्ञानिक सोच पर आधारित है।

### क्या है देशज तकनीक ज्ञान?

देशज तकनीक ज्ञान का अर्थ है – किसी क्षेत्र विशेष के लोगों द्वारा समय के साथ अर्जित किया गया वह पारंपरिक ज्ञान, जो स्थानीय संसाधनों के उपयोग से समस्याओं का व्यावहारिक समाधान प्रदान करता है। यह ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपराओं, अनुभवों, और सांस्कृतिक व्यवहारों के माध्यम से आगे बढ़ता है।

### देशज तकनीक के उदाहरण:

**कृषि में** – जैविक खाद, नाडेप कम्पोस्ट, बीज संरक्षण की पारंपरिक विधियाँ, जलसंचय के लिए 'पेरकोलेशन टैंक' और 'जोहड़' जैसी स्थानीय संरचनाएँ।

**स्वास्थ्य में** – आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध, लोक चिकित्सा प्रणाली जैसे घरेलू नुस्खे और औषधीय पौधों का उपयोग।

**गृह निर्माण में** – मिट्टी, गोबर, और चूने से बने मकान जो गर्मियों में ठंडे और सर्दियों में गर्म रहते हैं।

**उद्योग में** – हथकरघा, मिट्टी के बर्तन, लोककला से जुड़े हस्तशिल्प कार्य।



### आज की आवश्यकता: देशज ज्ञान का पुनर्मूल्यांकन और नवाचार

आज जब दुनिया सतत विकास (Sustainable Development) की ओर बढ़ रही है, तब देशज तकनीक ज्ञान हमें सिखाता है कि कैसे बिना प्रकृति को नुकसान पहुँचाए, संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग किया जा सकता है। हमें आवश्यकता है—

- विश्वविद्यालयों में देशज ज्ञान पर शोध को बढ़ावा देने की।
- ग्रामीण समुदायों से संवाद स्थापित कर उनके अनुभवों को संकलित करने की।
- आधुनिक तकनीक के साथ देशज तकनीक को एकीकृत करने की।

देशज तकनीक ज्ञान भारतीय विरासत की अमूल्य थाती है। यह केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि भविष्य की कुंजी भी है। इसे अपनाकर हम एक आत्मनिर्भर, टिकाऊ और समरस समाज की ओर अग्रसर हो सकते हैं। अब समय है कि हम इस ज्ञान को पुनः सम्मान दें, इसे आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़ें और नई पीढ़ी को इसके महत्व से परिचित कराएँ।



## संपादकीय मंडल

संरक्षक : प्रो. डॉ. अरुण रमेश जोशी,

कुलगुरु, सीवीआरयू खंडवा,

प्रधान संपादक : श्री रवि चतुर्वेदी, कुलसचिव, सीवीआरयू, खंडवा,

कार्यकारी संपादक : प्रो. नेहा शुक्ला, मुख्य प्रकाशन अधिकारी

सदस्य : 1. डॉ. सीमा शर्मा, डायरेक्टर रिसर्च एंड इनोवेशन

2. डॉ. गणेश मलगाया, डायरेक्टर केंद्रीय

प्रयोगशाला समन्वयक

3. प्रो. योगेश महाजन, तकनीकी अधिकारी,

कुलगुरु सचिवालय

संकल्पना : इंजी. प्रमोद पटेल, ग्राफिक डिजाइनर

प्रकाशन विभाग

संचार एवं प्रसार : श्री मनदीप सिंह पंवार, अध्ययनशाला समन्वयक

आर्यभट्ट स्कूल ऑफ डिजिटल लर्निंग

श्री हमज़ा मलिक, सहायक ग्रंथपाल

वनमाली केन्द्रीय ग्रंथालय

### देशज ज्ञान का वैज्ञानिक मूल्य

हाल के वर्षों में वैज्ञानिक समुदाय और विश्वविद्यालयों ने भी माना है कि देशज ज्ञान केवल परंपरा नहीं, बल्कि उसमें आधुनिक विज्ञान की नींव छिपी होती है। उदाहरणस्वरूप, हल्दी का एंटीसेप्टिक गुण, तुलसी का रोग प्रतिरोधक प्रभाव, या पंचगव्य का कृषि में उपयोग – ये सब आधुनिक शोध से भी प्रमाणित हो चुके हैं।

## विज्ञान और भारतीय ज्ञान परंपरा

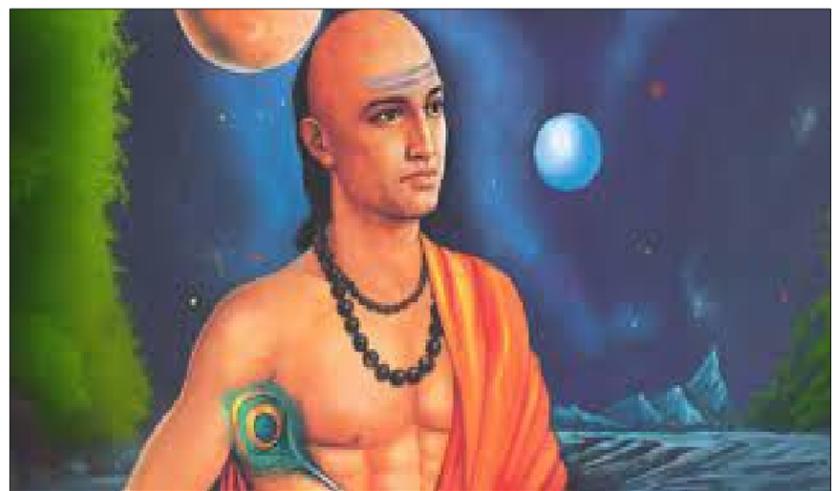
भारत की प्राचीन सभ्यता विश्व की सबसे पुरानी और समृद्ध ज्ञान परंपराओं में से एक है। यहाँ न केवल धार्मिक और दार्शनिक चिंतन हुआ, बल्कि विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, ज्योतिष, खगोलशास्त्र, और तकनीकी ज्ञान के क्षेत्र में भी अद्भुत उपलब्धियाँ हुईं। भारतीय ज्ञान परंपरा ने प्रकृति, मानव शरीर, ब्रह्माण्ड, और जीवन के रहस्यों को समझने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया, जो आज भी आधुनिक विज्ञान के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।



भारतीय खगोलशास्त्र ने भी ग्रहों, नक्षत्रों और ब्रह्माण्ड की संरचना को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, वराहमिहिर जैसे वैज्ञानिकों ने ऐसे सिद्धांत प्रस्तुत किए जो आज के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी सराहनीय हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा में विज्ञान केवल प्रयोग और तकनीकी ज्ञान नहीं था, बल्कि इसमें आध्यात्मिकता, दर्शन, और नैतिकता का भी समावेश था। यह समग्र दृष्टिकोण जीवन को संतुलित और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व में रहने की शिक्षा देता है।

प्राचीन भारत में ऋषि-मुनियों ने पर्यावरण और प्राकृतिक घटनाओं का गहन अध्ययन किया। उन्होंने वेद, उपनिषद, और संस्कृत ग्रंथों में ऐसे ज्ञान का सन्निवेश किया जो प्रकृति के नियमों और जीवन के विज्ञान को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, आयुर्वेद ने मानव शरीर के स्वास्थ्य और रोगों के इलाज के लिए प्राकृतिक औषधियों और सटीक चिकित्सा पद्धतियों का विकास किया। भारत में गणित की उन्नति भी अतुलनीय रही — शून्य की खोज, दशमलव पद्धति, और त्रिकोणमिति जैसे क्षेत्रों में योगदान विश्वप्रसिद्ध हैं।



आज जब हम आधुनिक विज्ञान की प्रगति देख रहे हैं, तब हमें अपनी इस गौरवशाली परंपरा से प्रेरणा लेनी चाहिए। भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक विज्ञान का समन्वय हमें सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण, और स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में नए आयाम खोल सकता है।

इसलिए विज्ञान और भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन न केवल हमारे अतीत को समझने का माध्यम है, बल्कि भविष्य की दिशा तय करने का भी आधार है।



## Center for Science Communication: विज्ञान को समाज से जोड़ने का पुल



हमारी यूनिवर्सिटी के विज्ञान विभाग द्वारा स्थापित Center for Science Communication (वैज्ञानिक संचार केंद्र) का मुख्य उद्देश्य विज्ञान को केवल प्रयोगशाला या कक्षाओं तक सीमित न रखते हुए, उसे व्यापक समुदाय के बीच पहुँचाना और समझना है। यह केंद्र विज्ञान को सरल, प्रभावी और रोचक भाषा में जनता तक पहुँचाने का कार्य करता है, ताकि हर व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में विज्ञान के महत्व को महसूस कर सके और उसका लाभ उठा सके।

विज्ञान की भाषा अक्सर जटिल होती है, जिससे आम जनता के लिए इसे समझना कठिन हो जाता है। इस केंद्र के माध्यम से हम स्थानीय भाषा और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में विज्ञान की बात करते हैं, जिससे ज्ञान का प्रसार और अधिक सशक्त हो। केंद्र विज्ञान शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य जागरूकता, कृषि प्रौद्योगिकी और तकनीकी नवाचार जैसे महत्वपूर्ण

विषयों पर समुदाय के साथ संवाद स्थापित करता है।

केंद्र के तहत नियमित रूप से कार्यशालाएँ, विज्ञान मेले, जागरूकता अभियान, स्कूल एवं कॉलेज स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। ये पहल वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देती हैं और युवा पीढ़ी में नवाचार की भावना जगाती हैं। साथ ही, यह केंद्र स्थानीय समुदाय की समस्याओं के वैज्ञानिक समाधान खोजने में भी भूमिका निभाता है, जिससे विश्वविद्यालय और समाज के बीच गहरा संबंध स्थापित होता है।

Center for Science Communication का यह प्रयास विज्ञान को सामाजिक विकास और सतत प्रगति का माध्यम बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह केंद्र न केवल ज्ञान का संचार करता है, बल्कि समाज में विज्ञान के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और विश्वास भी विकसित करता है।



## लोकोक्तियों में विज्ञान - परंपरा में छिपा तर्क और अनुभव

भारतीय जनजीवन में लोकोक्तियाँ केवल भाषा की सुंदरता नहीं, बल्कि अनुभव, तर्क और गूढ़ ज्ञान का अद्भुत संकलन हैं। लोक में प्रचलित ये कहावतें सिर्फ सामाजिक व्यंग्य या नैतिक संदेश नहीं देतीं, बल्कि इनमें वैज्ञानिक सोच और प्रकृति के साथ मानव के व्यवहार का गहन विश्लेषण भी छिपा होता है।

### लोकोक्तियाँ: अनुभवजन्य विज्ञान का आईना

जब विज्ञान साक्ष्य आधारित होता है, तो लोकज्ञान अनुभव आधारित होता है। लोकोक्तियाँ उस अनुभवजन्य विज्ञान की अभिव्यक्ति हैं, जो लोगों ने प्रकृति, समय, कृषि, शरीर, और समाज के व्यवहार को देखकर अर्जित किया है।

#### आइए कुछ लोकोक्तियों पर नज़र डालें जिनमें विज्ञान छिपा हुआ है:

- वायु चले ईशान तो, खाना खाये किसान।"
- यदि हवा ईशान कोण से चलती है, तो किसान को अच्छा खाना मिलेगा, यानी फसल अच्छी होगी।
  - "पछुआ आई बादरी, राँड कुसुम भी जाय। यह बरसे वह वर करे इनका यही सुभाय।"
  - यदि पछुआ (पश्चिमी) हवा के साथ बादल आते हैं, तो वे बारिश करते हैं, जो वर (पुरुष) को प्रसन्न करता है।
  - "जो बादरी में खमसे। कहें भड्डरी पानी बरसे।"
  - यदि बादल में एक जगह से दूसरी जगह जाने वाला क्रम होता है, तो भड्डरी कहती हैं कि बारिश होगी।
  - "कलशा पानी गरम है, चिरियां रहावें धूर। अंडा ले चींटी चलें तो बरसा भरपूर।"
  - यदि कलश में पानी गरम है, चिड़िया धूल में हैं, और चींटी अंडे लेकर चलती हैं, तो भरपूर बारिश होगी।
  - "माघ में बादर लाल धरे। तो जानों सच पाथर परे।"
  - यदि माघ महीने में लाल बादल होते हैं, तो समझ लेना चाहिए कि सच में पत्थर गिरेंगे (यानी बारिश होगी)।
  - "इतिवार करे धनवंतर होय, सोम करे सवाया फल होय। बुध, शुक्र, गुरू भरे बखार, शनि, मंगल, बीज न आवे द्वार।"
  - यदि रविवार को धनवंतर (अग्नि) हो, सोमवार को सवाया फल हो, बुध, शुक्र, और गुरू बखार (भण्डार) भरे, तो शनि और मंगल बीज को द्वार तक नहीं आने देंगे।
  - "माघौ मासहि हिम परै, बरसै बिजुली गाज।"
  - यदि माघ महीने में हिम (बर्फ) पड़ता है और बिजली चमकती है, तो बारिश होगी।
  - "जेठ मासै रवि तपै, उष्ण चलत जग वाई।"
  - यदि जेठ महीने में सूर्य तपता है और उष्ण (गर्मी) हवा चलती है, तो दुनिया में गर्मी होगी।
  - "भादव सुदी की पंचमी, जे घन नहिं बरसंत।"
  - यदि भादव महीने की पूर्णिमा (सुदी) के दिन बादल नहीं बरसे, तो अकाल होगा।
  - "सावन वदी को चौथ संभार।"
  - सावन महीने की पूर्णिमा (वदी) के दिन, चौथे दिन बादल संभार (भरपूर बारिश) करते हैं।
  - "गुरू शुक्र दोऊ मिलै, दस भादौं कर देइ।"
  - यदि गुरू और शुक्र (ग्रह) मिलते हैं, तो भादव महीने के दसवें दिन बारिश होगी।
  - "माघ महीनै परै न शीत।"
  - यदि माघ महीने में शीत (ठंड) नहीं पड़ती है, तो अकाल होगा।
  - "पूरब उत्तर जब लगै, चलत नहीं जग वाइ।"
  - यदि पूरब (पूर्व) और उत्तर (उत्तर) में हवा नहीं चलती है, तो दुनिया में हवा नहीं चलेगी।



#### परंपरा और विज्ञान का सुंदर संगम

लोकोक्तियाँ केवल भाषा की चतुराई नहीं हैं, बल्कि वे हमारे पूर्वजों द्वारा संचित वैज्ञानिक सोच, प्राकृतिक अवलोकन, और व्यावहारिक ज्ञान की अमूल्य धरोहर हैं। इन्हें आधुनिक विज्ञान से जोड़कर देखा जाए तो ये शिक्षण, संप्रेषण और शोध का सशक्त माध्यम बन सकती हैं।

आज की आवश्यकता है कि हम इस देशज ज्ञान और विज्ञान के सेतु को पुनः पहचानें और आधुनिक संदर्भों में उसे विद्यार्थियों और समाज के बीच वैज्ञानिक चेतना के प्रसार हेतु उपयोग में लाएँ।

## शिक्षा के क्षेत्र में विज्ञान में घटती रुचि: एक गंभीर चिंता

विज्ञान ने मनुष्य के जीवन को नई दिशा दी है—चाँद पर पहुंचने से लेकर जेनेटिक इंजीनियरिंग, इंटरनेट और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तक, वैज्ञानिक उपलब्धियाँ आधुनिक सभ्यता की रीढ़ हैं। फिर भी यह विडंबना है कि आज के शिक्षा जगत में विज्ञान विषयों के प्रति छात्रों की रुचि निरंतर घटती जा रही है। यह प्रवृत्ति न केवल शिक्षा व्यवस्था के लिए, बल्कि राष्ट्र के भविष्य के लिए भी चिंता का विषय है।



### रुचि में गिरावट के कारण

विज्ञान को अक्सर एक कठिन, बोझिल और अंकों पर आधारित विषय के रूप में देखा जाता है। विद्यालयों में पाठ्यपुस्तकों और परीक्षाओं का अत्यधिक बोझ, प्रयोगात्मक शिक्षण की कमी, और विज्ञान को केवल सिद्धांतों तक सीमित रखने से छात्रों में इस विषय के प्रति आकर्षण कम होता जा रहा है। विज्ञान को जीवन से जोड़कर पढ़ाने के बजाय, उसे अंक अर्जन का साधन बना दिया गया है। साथ ही, समाज में विज्ञान को लेकर व्यावसायिक दृष्टिकोण—जैसे केवल डॉक्टर या इंजीनियर बनना ही

इसका उद्देश्य है—छात्रों को विज्ञान की मूल जिज्ञासा और खोजी प्रवृत्ति से दूर कर देता है।

### समाधान की दिशा में कदम

इस स्थिति को बदलने के लिए आवश्यक है कि विज्ञान शिक्षण में बदलाव लाया जाए। कक्षाओं में प्रयोगों, मॉडल्स, सामुदायिक परियोजनाओं, स्थानीय समस्याओं के वैज्ञानिक हल और व्यावहारिक गतिविधियों को बढ़ावा देना चाहिए। विज्ञान को कहानी, प्रश्नों, लोक परंपरा और अनुभवजन्य सीख के माध्यम से रोचक बनाया जा सकता है।

विद्यालय स्तर से ही छात्रों में वैज्ञानिक सोच, तर्क, विश्लेषण और प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। विज्ञान केवल एक विषय नहीं, बल्कि जीवन का दृष्टिकोण है—यह समझ विद्यार्थियों तक पहुंचाना समय की माँग है।



### समाज और विश्वविद्यालय की भूमिका

समाज और विश्वविद्यालयों को मिलकर विज्ञान को फिर से 'लोक-हितैषी ज्ञान' के रूप में प्रस्तुत करना होगा। Center for Science Communication जैसे संस्थानों को विद्यालयों और ग्रामीण समुदायों के साथ मिलकर विज्ञान जागरूकता फैलानी चाहिए। विज्ञान शिक्षकों का प्रशिक्षण, नई तकनीकों और संवाद-कला के साथ होना चाहिए ताकि वे

बच्चों के मन में प्रश्न उठने दें और उन्हें खोजने की स्वतंत्रता दें।

विज्ञान में घटती रुचि एक अलार्म है, जो हमें संकेत देता है कि शिक्षा की दिशा में हमें बदलाव लाना होगा। विज्ञान को पाठ्यक्रम से निकालकर जीवन के केंद्र में लाना होगा—तभी हम एक जिज्ञासु, वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले और नवाचारशील समाज की ओर अग्रसर हो सकेंगे।